हमेशा महिलाओं की अपेक्षा पुरूष को ज्यादा महत्वशाली समझने की भावना को प्रश्रय देती है । इसीलिए आशाराणी व्होरा अपनी पुस्तक नारी शोषण: आइने और आयाम में लिखती है । ``न अकेला पुरूष सार्थक है, अकेली स्त्री जीवन में जब दोनों ही एक दुसरे के पूरक है तो इनमें प्रतिद्वंद्विता या होड कैसी ? सृजन भी समानता से नही पूरकता से ही संभव हैं ।`` नारीवादी चितन का प्रारंभ १८ वी सदी में इंग्लैण्ड में हुए स्त्री अधिकारों के आंदोलन से हुआ माना जाता है । भारत में स्त्री अधिकार संबंधी चर्चाओं का प्रारम्भ राजा राममोहराय, केशवचन्द्र सेन, महात्मा फुले, आचार्य कर्वे, जष्टिस रानडे तथा गांधीजी जैसे पुरूषों द्वारा ही हुआ था ।

नारी -मुक्ति आंदोलन आखिर क्या हे ? कौनसी स्वतंत्रता चाहती है नारियाँ खानपान की, पहनावे की, यौन संबंधो की, अथवा विचारों की ? तमाम मुद्दो को लेकर नारि मुक्ति के लिए संघर्ष करनेवाली नारियों के भी दो गुट बन गये । एक तथाकथित आधुनिकता तथा मुक्ति की बात करने वाली फैशन परस्त नारियाँ, दूसरी वास्तव में विभिन्न स्तरों पर किए जा रहे नारियों के शोषण के खिलाफ आवाज उठानेवाली नारियाँ । नारी अपने आपको समर्थ और सबल बनाकर ही अपने अधिकार अर्जित कर सकती है । प्रो. सुश्री सोना कहती है - ``इश्वर ने स्त्री पुरुष दोनों भिन्न - भिन्न प्राणियों की सृष्टि की है और स्पष्टता दोनों प्रकृति भिन्न है । अतः नारी मुक्ति के नाम पर नारी को पुरूष मान लेना असंभव है ।२`` सामाजिक पराधिनता, पुरूष अधीनस्थता, प्रचलित आदर्श, विश्वासों मान्यताओं व मूल्यों के सम्बन्ध से नारी को मुक्त करने का प्रयास ही नारी मुक्ति आंदोलन है । अनादी काल से नारी जाति का चहुँमुखी शोषण होता रहा है । आज नारी को ऐसे ही शोषण से मुक्त कराने के प्रयास हो रहा है । इसलिए आज के युग को महिला जागरण का युग कहा जा रहा है । अब नारी के अधिकारों, सुरक्षा के लिए अनेक नियम एवं अधिनियम बनाये जा रहे है । डॉ. ओमप्रकाश शर्मा के अनुसार ``संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा घोषित अंन्तरराष्ट्रीय महिला वर्ष के द्वौरान यह महसूस किया गया कि दुनियाँ की बातें तब तक निरर्थक है, जब तक कि असमान स्थिति की शिकार महिलाओं को बराबरी का दर्जा नही दिया जाता । सामाजिक नवनिर्माण में महिलाओं के बारे में नए ढंग से सोचने के लिए प्रेरित किया।``३

स्त्री की समस्या समग्र मानवीय समस्या होने के साथ भी अपनी एक अलग और विशिष्ट समस्या भी है । औरत आधी दुनिया है, आधा हिन्दुस्तान है, फिर उसे मानवीय गरिमा से वंचित क्यों रखा गया ? समय में बदलाव आया है अब महिलाएँ चारदीवारी में रहना पसंद नही करती । वह घर के बाहर उत्पादक कार्य करने के लिए लालायित है ।

आज अर्थव्यवस्था के प्रत्येक क्षेत्र में उसका प्रवेश है । अंतरराष्ट्रीय स्तर के आर्थिक सर्वेक्षण आंकडे बताते हे की, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में महिलाओं का योगदान पचास से अस्सी प्रतिशत के बीच है । इसके अलावा उसके उपर परिवारिक जिम्मेदारीयों का बहुत बडा बोझ भी हैं । विश्वस्तर पर पुरूषों द्वारा नारियों पर होनेवाले, अत्याचार शोषण, असके नष्ट होने वाले अधिकार, समानाधिकार, उद्योग, व्यवसाय राजनीति में बरोबर का हक आदि बातों को लेकर कानून की आवश्यक्ता है । नारियाँ अपनी तरफ से लड रही है । जुलूस निकाल रही हैं, प्रदर्शन कर रही हैं, नारेबाजी चला रही है । फिर भी पुरूषों द्वारा अत्याचारों एवं शोषण में कमी नही आयी है । भाई द्वारा बहन, बाप द्वारा बेटी का, देवर द्वारा भाभी, बॉस द्वारा ऑफिस की महिला कर्मियों का, टिचर द्वारा छात्रा, का, पति द्वारा पत्नी के मर्जी के खिलाफ, छात्र द्वारा महिला टिचर का यौन शोषण कभी मर्जी से, कभी चोरी छिपे, कभी धमकाकर रूपयों-पैसों या प्रमोशन का लालच दिखाकर शोषण जारी हैं ।४ औरत शताब्दियों से सहन कर रही है । वह अपार सहनशीलता की करूणामय मूर्ति बन गई है ।

पुरूष द्वारा प्रताडित शोषित. उपेक्षित नारियों के ऐसे कई सवालों पर जब तक गाँव-गाँव, गली -गली, नगर-नगर, महानगर-महानगर, देश-देश की औरते नही लडेगी आवाज नहीं उठाएँगी, तब तक आपको ऐसी घटनाओं का शिकार होना पडेगा । पुलिस का ऐसे मामलों में काम है जल्द -से जल्द गुणहगार को पकडना और कानून का काम है जल्दी मुकदमा चलाकर शीघ्रातिशिघ्र न्याय दिलाना । नारी -अधिकारों की और उन सवालो के जबाबों की माँग क्षमा शर्मा ``स्त्री का समय`` में कहती है - ``आखिर आदमियों को यह हक क्यों होना चाहिए कि वे ये बताएँ कि औरतें किस तरह का आचरण करें ।``५

नर और नारी इस सचराचर सृष्टी के निर्माण एवं संचलन के अभिन्न तत्व हैं । आदिकाल से लेकर आज तक संसार-रथ-नर-नारी-रूपी चक्रो से ही गतिशील रहा है । मानव जीवन का अस्तित्व स्त्री एवं पुरूष के अन्योन्यश्रित सहयोग से ही आज तक बना रहा है । परंन्तु मानव-जाति का दुर्भाग्य हे कि समग्र विश्व में पुरूषों का ही अधिपत्य है । पुरूष का अपना अस्तित्व और अस्मिता है । वह मानव है जब कि नारी केवल नारी है, उसे नर की छाया-मात्र ही बने रहना है । नारी-देवी माँ बेटी, बहन, पत्नी, प्रेमिका, सहचरी-सब कुछ हो सकती है, पर संसार के विकास में पुरूष की साजेदार होने के बावजूद अतः प्रज्ञा एवं अन्य मानवीय गुणों से सम्पन्न होते हुए भी वह मानवी रूप में स्थापित नही हो सकति है, ``पत्येक समाज में, चाहे वह आदिम हो या उन्नत स्त्रियों की स्थिति उस समाज में प्रचलित आदर्शो,विश्वासों,मान्यताओं व मूल्यों के आधार पर तथा उन्हें सोंपे गए कार्यो के अनुसार निश्चित होती है ।``६ भारतीय समाज में परिस्थितीयों के अनुसार नारी-विषयक धारणाएँ परिवर्तित होती रही है एव वैदिक -काल से लेकर आज तक समाज में नारी के मातृत्व में गृहिणी धर्म को ही महत्वपूर्ण माना गया है । भारतीय समाज-सुधारकों एवं पुनरूत्थानवादी विचारकों के अथक परिश्रम एवं प्रेरणा से प्राप्त शिक्षा, गांधीजी के नेतृत्व में स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय सहयोग से जागृत आत्मविश्वास एंव भारतीय संविधान प्रदत्त समान अधिकरों ने आधुनिक भारतीय नारी को उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर किया ।

UGC Approved Journal No. 45886
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

पौराणिक युग में नारी की दशा बहुत दयनीय थी क्योंकि `` निः सन्तान पत्नी को विवाह के दसवर्ष बाद त्याग दिया जा सकता है जो स्त्री सन्तान को जन्म देती है, उसे बारह वर्ष बाद, जिस स्त्री के बच्चे जीवित नहीं रहते हैं, उसे पन्द्रह वर्ष बाद और कलह परायण स्त्री को तुरन्त त्यागा जा सकता है ।``[३] साथ ही रामायण महाभारत काल में महिलाओं का वर्णन विदूषियों के रूप में कम और तप, त्याग, नम्रता पति सेवा आदि गुणों से विभूषित गृहस्वामिनी के रूप में अधिक मिलता है । महाभारत काल में पाण्डवों द्वारा द्रौपदी को जुएँ में दाँव पर लगा देना और रामायण काल में एक धोबी द्वारा सन्देह व्यक्त करने पर राम जैसे महापुरुष का भी सीता को वनवास दे देना पत्नी पर पती के मनमाने अधिकारों की पुष्टि करता है । नारी केवल उपभोग की वस्तु समझी जाने लगी थी । महाभारत में अनेक उदाहरण मिलते है जो, ``न स्त्री स्वातंत्र्य महंति को चरितार्थ करते है भिष्म ने युधिष्ठिर से कहा नारी से बढकर अशुभ और कुछ भी नहीं । नारी के प्रति पुरूष के मन में कोई स्नेह या ममता रहना उचित नहीं ।``[४] वैदिक काल से नारी पर जैसे - जैसे बधन जटिल होते गये उसमें मुक्ति की कामना भी तीव्र होती गई । मध्यकाल में नवजागरण काल तक का इतिहास इसी समझौते का प्रत्यक्ष प्रमाण है । भारत में नारी मुक्ति का अर्थ पुरूष सत्ता से मुक्ति कभी नहीं रहा राष्ट्रीय समस्याओं को स्त्रियों ने प्रारंभसे पुरूषो के साथ मिलकर ही सुलझाया । भारत पर जब कभी आक्रमण हुएँ उस समय राज्य का प्रशासन स्वयं सँभाल, युध्द के लिए पति और पुत्रों में साहस का संचार करनेवाली स्त्रियों की अनेक कथाएँ इतिहास में है । १८५७ ई में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में झाँझी की रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल, देवी चौधरानी, कित्तूर की रानी चेनम्मा जैसी वीर महिलाओंने अपनी राष्ट्रीय चेतना का परिचय दिया ।[५]

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद महिलाएँ अपनी पूरी शक्ति के साथ प्रगति के दिशा में अग्रसर हुई । आज देश में जो महिला संगठन कार्यरत है उनमें केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड, महिला बाल-कल्याण परियोजनाएँ कस्तुरबा स्मारक निधि, भारतीय ग्रामिण महिला संघ, अखिल भारतीय महिला परिषद की विभिन्न शाखाएँ, नारी रक्षा समिती, वाई, डब्ल्यू.सी.ए.वीर नारी-संगठन आदि प्रमुख है। वर्ष १९७५ को महिला वर्ष घोषित किया गया, यह महिलाआहें की स्थिति सुधार लाने की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण घटना थी । कुछ नये कानून -संशोधन भी प्रस्तुत हुए । औरत होने पर औरतों से फक्र करना चाहिए । अपनी मर्जी के बीज बोकर उस फसल को सलाम करना है जो सिर्फ औरत का है । अंग्रेजी के एक बडे अखबार ने कुछ साल पहले एक सर्वे किया था, कि अगले जन्म में वे क्या होना चाहती है । इसमें करीब-करीब ९६ वे प्रतिशत औरतों ने कहा था कि वे औरत ही बनना चाहती है । कोई बात है, कितने दुख, तनाव, उपेक्षा और भेदभाव के बाद भी औरत हर जन्म में औरत ही होना चाहती है । इसलिए आज पहले औरत है फिर कुछ भी यह झिझक की बात नहीं।

नारी को लेकर विभिन्न प्रकार के अध्ययन हो रहे हैं । युगानुरूप नारी की नई भूमिका को समझाया जा रहा है । नारित्व की, परम्परागत धारणा अपना अर्थ खो चुकी है इसलिए नयी धारणा को निर्माण कर भविष्य की दिशा निश्चित की जानी चाहिए । आज की नारी की भागीदारी के बिना कोई भी कार्य पूर्ण नही माना जाता । समाज के हर क्षेत्र में उसका परोक्ष, अपरोक्ष रूप में प्रवेश हो चुका है । आज व बंदिश कटघरे, लक्ष्मण रेखाओं को लांघकर उन बेडियों को सलाखों को तोडकर बाहर आ गई है । वह खडकधारिणी काली है, पाखंडी का वध करने आगे आ रही है । वह दशप्रहर धारिणी दुर्गा है, संसार में नारी शक्ति को जगाने के लिए वह संसार को सुशोभित करनेवाली लक्ष्मी है । वह सरस्वती है जो विद्या वितरण करती है ।

संदर्भ :-

१. मासिक पत्रिका - मधुमती - मार्च २०११ -पृ.क्र.०८
२. मासिक पत्रिका - समाज कल्याण - फरवरी १९९७ -नानकचंद - पृ.क्र.१८
३.समकालिन महिला लेखन - डॉ.ओमप्रकाश शर्मा - पृ.क्र.१९
४. हाशियों की आवाज -अप्रैल २०१३ - पृ.क्र.२४
५.मासिक पत्रिका -हंस - मई २००० - राजेन्द्र यादव - पृ.क्र.९४.
६.भारतीय नारी : दशा, दिशा - आशाराणी वोरा - पृ.क्र.९९
७.बोधायाम धर्मसुत्र : २/४/८
८.महाभारत : महर्षि व्यास - पृ.क्र.१२/४०/१
९. महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी वादी दृष्टि -डॉ.अमर ज्योति - पृ.क्र.२१

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani
PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani

□□□